कारक

कारक का सामान्य प्रयोग

वे शब्द जो वाक्य में क्रिया के साथ प्रत्यक्ष संबंध दर्शाते हैं, कारक कहलाते हैं। तथा जिन प्रत्ययों से कारकों का अर्थ प्रकट होता है, विभक्ति कहलाते हैं।

हिन्दी भाषा में जिस प्रकार से कर्ता का क्रिया के साथ संबंध बताने के लिए इन कारकों का प्रयोग किया जाता है, वैसे ही संस्कृत भाषा में विभक्तियों का प्रयोग होता है।

संस्कृत भाषा में संबंध को कारक नहीं माना गया है क्योंकि संबंध का क्रिया से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता है।

जैसे:

राज्ञपुरुष: गच्छति।

अर्थात, राजा का पुरुष जाता है।

यहाँ राजा का गच्छति क्रिया से संबंध नही है। अत: इसे कारक की संज्ञा नहीं दी जा सकती है।

एक उदाहरण की सहायता से आप कारक तथा विभक्ति को समझने का प्रयास करें।

हे छात्रा:!(11) दशरथस्य(10)सुत:(1) राम:(2) दण्डकारण्यात्(8)लङ्का(3)गत्वा युद्धे(9)रावण(4)बाणेन(6)हत्वा विभीषणाय(7)लङ्काराज्यम्(5)अयच्छत्(12)।

नीचे दी गई तालिका के आधार पर हम इस वाक्य को कारक के अनुसार लगाएंगे।

क्रम संख्या	शब्द:/पदानि	कारकम्	विभक्ति
1, 2	सुतः, रामः	कर्ता (ने)	प्रथमा
3, 4, 5	लङ्का, रावणं, लङ्काराज्यम्	कर्म (को)	द्वितीया

6	बाणेन	करणम् (से, के द्वारा)	तृतीया
7	विभीषणाय	सम्प्रदान (के लिए)	चतुर्थी
8	दण्डकारण्यात्	अपादान (से पृथक होने के लिए)	पञ्चमी
9	युद्धे	अधिकरण (में, पे, पर)	सप्तमी

इनकी सहायता से आप प्रत्येक विभक्ति पर कम-से-कम दो-दो वाक्य अवश्य बनाएं।

विभक्ति - अर्थ एवं प्रयोग

जिन शब्दों या प्रत्ययों द्वारा कारकों का अर्थ प्रकट होता है, विभक्ति कहलाते हैं।

अब हम एक-एक करके सभी विभिक्तियों एवं उनसे जुड़े कारकों पर चर्चा करेगें।

1. प्रथमा विभक्ति तथा कर्ता कारक

जिसके द्वारा कार्य किया जाता है, उसे कर्ता कहते हैं, तथा इसके लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग करते हैं।

जैसे: राम: गच्छति।

राम जाता है।

यहाँ आप देख सकते हैं कि गच्छति (जाना) क्रिया राम द्वारा की जा रही है। अत: राम कर्ता है, जिसके लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

2.द्वितीया विभक्ति तथा कर्म कारक

कर्ता को जो कार्य सबसे अभीष्ट होता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

"कर्तृरीप्सीतमम् कर्म"

कर्म कारक के लिए द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे: राम**:** लङ्कां गच्छति।

राम लंका जाता है।

यहाँ राम के लिए लंका जाना अभीष्ट है। अत**:** यह कर्म कारक हुआ, जिसके लिए द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

3. तृतीया विभक्ति तथा करण कारक

जिस साधन की सहायता से कार्य संपन्न किया जाता है, उसे करण कारक कहते हैं।

इसके लिए तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे: राम: पुष्पकविमानेन लङ्कां गच्छति।

राम पुष्पकविमान से लंका जाता है।

यहाँ कर्ता राम पुष्पकविमान से क्रिया को संपन्न करता है। अत: यह करण कारक है, जिसके लिए तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

4. चतुर्थी विभक्ति तथा संप्रदान कारक

जिसके लिए कार्य संपादित होता है, उसे संप्रदान कारक कहा जाता है। इसके लिए चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे: राम: सीतायै लङ्कां गच्छति।

राम सीता के लिए लंका जाता है।

यहाँ राम, सीता के लिए जाने का कार्य करता है। अत: सीता संप्रदान कारक है, जिसके लिए यहाँ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

5. पञ्चमी विभक्ति तथा अपादान कारक

जिससे अलग/पृथक होने का कार्य हो, उस पद को अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक के लिए पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे: राम: वनात् लङ्कां गच्छति।

राम वन से लङ्कां जाता है।

यहाँ राम <u>वन से</u> अलग होकर लङ्कां जाता है, अत: यह अपादान कारक है। इसके लिए पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

6. षष्ठी विभक्ति

षष्ठी विभक्ति का प्रयोग संबंध बताने के लिए किया जाता है।

जैसे: रावणस्य भ्राता विभीषण:।

रावण का भाई विभीषण।

7. सप्तमी विभक्ति तथा अधिकरण कारक

कार्य के आधार को अधिकरण कहते हैं। इसके लिए सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे: राम <u>वने</u> वसति स्म।

राम <u>वन में</u> रहे थे।

यहाँ <u>वसति</u> क्रिया वन में संपन्न हुई। अत: यह अधिकरण कारक है। इसके लिए सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

उपपद विभक्ति

जब हम विभक्तियों का प्रयोग कारकों के आधार पर न करके किसी अन्य के अनुसार करते हैं, तो उसे उपपद विभक्ति कहते हैं।

जैसे: उभयत: (दोनों ओर), परित: (चारों ओर), सर्वत: (सब ओर), नम: (नमस्कार है), उपरि (ऊपर) आदि।

आइए अब एक-एक करके इनके प्रयोग तथा अर्थ को जानने का प्रयास करते हैं।

1. उभयत:

इसका अर्थ होता है, <u>दोनों ओर</u>।

इसके साथ हम द्वितीया विभक्ति का प्रयोग करते हैं।

जैसे:

मार्गम् <u>उभयत:</u> वृक्षा सन्ति।

मार्ग के चारों ओर वृक्ष हैं।

यहाँ हम देख सकते हैं कि अगर हम हिन्दी का प्रयोग तो 'मार्ग के' लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होना चाहिए, परन्तु उभयत: शब्द होने के कारण यहाँ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

शिक्षकम् उभयत: बालका: सन्ति।

अध्यापक के दोनों ओर बच्चे हैं।

2. परित:

परित: का अर्थ है, चारों ओर।

इसके साथ भी हम द्वितीया विभक्ति का प्रयोग करते हैं।

जैसे:

उद्यानं परित: जना: सन्ति।

उद्यान के चारों तरफ लोग हैं।

द्वीपं परित: जलं अस्ति।

टापू के चारों तरफ पानी है।

3. सर्वत:

सर्वत: का अर्थ है, सब ओर।

इसके साथ भी हम द्वितीया विभक्ति का प्रयोग करते हैं।

जैसे:

संसार सर्वत: ईश्वरं अस्ति।

संसार में सब ओर ईश्वर है।

आकाशं सर्वत: खगा सन्ति।

आकाश में सभी ओर पक्षी हैं।

4. नम:

नम: का अर्थ होता है, प्रणाम करना।

इसके साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे:

देवाय: नम:

देवता को प्रणाम है।

पित्रे नम:

पिता को प्रणाम है।

5. उपरि

उपरि का अर्थ है, ऊपर।

इसके साथ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे:

वृक्षस्य उपरि: फलानि सन्ति।

वृक्ष के ऊपर फल हैं।

पर्वतस्य उपरि हिम अस्ति।

पर्वतों के ऊपर बर्फ है।